उत्तराखण्ड के कुली बेगार आन्दोलन में दानपुर क्षेत्र का योगदान

डॉ0 कमल सिंह
इतिहास विभाग, के.के. एस.एस. प्वाईन्ट
कठायतवाडा नियर पी0 जी0 कॉलेज बागेश्वर (उत्तराखण्ड)

सार

दानपुर क्षेत्र का इतिहास पौराणिक काल से ही माना जाता है। मानसखण्ड के अनुसार "बृहत हिमालय के अन्तर्गत बृहतर कुर्माचंल की पर्वतीय सीमा नन्द पर्वत आर्थात (नन्दा देवी) गिरि पिण्ड का पूर्वी शिखर नन्दाकोट है" जिसकी गोद में दानपुर क्षेत्र बसा हुआ है। ऋग्वेद संहिता संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ है इससे विदित होता है। कि सप्त सिन्धु प्रदेश में सरस्वती के कॉठों में आर्यों की बस्तीयां बसी थी। "वैदिक तथा पौराणिक परम्पराओं में कॉठों में आर्यों की बस्तीयां बसी थी" उल्लेखित है जिसका आश्रय इस क्षेत्र से है क्योंकि सरस्वती एवं इसकी अन्य सहायक नदियां इस क्षेत्र का हिस्सा हैं। "वैदिक तथा पौराणिक परम्पराओं में आर्य राजवंशों की उत्पत्ति मनु से मानी गई है' 'मनु वैवस्तव के वंशज माने जाते है। मानव दीर्घकाल तक मेरू के आसपास सरस्वती के तटों पर निवास करते रहे" ऋग्वेद में बहुनामित सरस्वती के अतिरिक्त 'गोमती तथा सरयू' नदियों के नाम भी आये हैं। ये प्रमुख नदियाँ वर्तमान में दानपुर का ही हिस्सा है। जो आज भी इस क्षेत्र की पवित्र नदियॉ मानी जाती है। और वर्तमान में भी इन नदियों की प्रतिवर्ष पूजा अर्चना क्षेत्रीय लोगों द्वारा की जाती है इन पवित्र नदियों के मध्य का भू–भाग दानपुर जो ऐतिहासिक दृष्टि से सामाजिक एवं सांस्कृतिक रुप से अपनी अलग पहचान आज भी बनाये हुए है। और यह क्षेत्र जन आन्दोलनों एवं देश सेवा के क्षेत्र में भारत माता की रक्षा के लिए हमेशा ही तत्पर रहा है। इसका प्रमुख ऐतिहासिक प्रमाण कुली बेगार आन्दोलन है। इस आन्दोलन से प्रभावित होकर राट्रपिता महात्मा गॉधी जी को भी उत्तराखण्ड आना पड़ा था।

शब्द कुंजी– प्राचीन, दानपुर, कुली बेगार, जन आन्दोलन, रजिस्टर, ऐतिहासिकता, उतरायणी ।

परिचय

दानपुर के इतिहास को पौराणिक काल से भी जोडा जाता है परन्तु इस क्षेत्र को विशेष पहचान ब्रिटिश काल में प्राप्त हुई। ब्रिटिश काल में इस क्षेत्र में कत्यूरी घाटी व नाकुरी को भी शामिल किया गया और इसे दानपुर परगना बनाया गया। में 'कुमाऊॅ की पांच पट्टियाँ (दानपुर, व्यास, चौदास, जोहार और दारमा) में प्रमुख पट्टी दानपुर थी'[1]। 'सर्वप्रथम वर्तमान पट्टी व परगने का जिक्र चंद व गोरखों के समय में अस्तित्व में आया"[2] यह क्षेत्र "कत्यूरी राज्य काल के समय 11वीं सदी से लेकर चंद राज काल के आगमन तक 16 वीं सदी ई० तक खूब आबाद रही"[3] थी, और 'यहाँ प्रमुख 22 पाटों में दानपुर दूसरी प्रमुख पाट थी।'[4] इस भू–भाग का भौगोलिक सीमांकन को ब्रिटिश काल में पहचान मिली। उत्तराखण्ड के सीमान्त हिमालय में स्थित दानपुर एक विशिष्ट भौगोलिक इकाई को रेखांकित करता है इसे "चार भौगोलिक बिन्दु उत्तर में हिमालय, पूर्व में पूर्वी रामगंगा, पश्चिम में पिण्डर व कैल नदी घाटी तथा दक्षिण में गोमती व सरयू नदी का संगम बागेश्वर"[5] जो वर्तमान बागेश्वर जनपद में स्थित है इस स्थान पर वर्तमान में उत्तरायणी मेले का आयोजन भव्य रूप से होता है इसका श्रेय कुली बेगार आन्दोलन को ही जाता है।

उद्देश्य

1. दानपुर में स्थित बागनाथ मंदिर समूह का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व महत्व के साथ–साथ इस प्रांगण में हुए आन्दोलनों का अवलोकन करना।
2. इस क्षेत्र में हुए कुली आन्दोलन के महत्व को जानने का पूर्ण प्रयास एवं इसकी उपयोगिता का अध्ययन करना।
3. दानपुर क्षेत्र में कुली बेगार रजिस्टरों को सरयू में बहाने वालो क्षेत्रीय लोगों को जानना।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन कार्य को पूर्ण करने हेतु शोधार्थी द्वारा विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक विधि एवं ऐतिहासिक तथ्यों व साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन **"उत्तराखण्ड के कुली बेगार आन्दोलन में दानपुर क्षेत्र का योगदान"** में शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक ऑकड़ो का प्रयोग साक्षात्कार के माध्ययम से विश्लेषण किया गया है। साथ ही द्वितीयक ऑकडों में कुली बेगार आन्दोलन से संबंधित पत्र–पत्रिकाऐं, पुस्तकें, समाचार पत्रों की सहायता ली गई है।

कुली बेगार आन्दोलन का ऐतिहासिक महत्व एवं क्षेत्रीय योगदान

कुली बेगार? बेगार का ही एक कुत्सित रूप थी। इसे तत्कालीन अंग्रेज अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा लागू की गई एक अमानवीय प्रथा जिसको जारी रखने के लिए उन्होंने सभी नैतिक व न्यायपूर्ण मूल्यों को ताक में रखकर अपनी सुविधा हेतु निशुःल्क जबरन कराये जाने वाले कार्य को कुली बेगार कहा जाता है। हलांकि यह प्राचीन काल से ही प्रचलित रही थी "कत्यूरी, चन्द तथा गोरखाओं ने भी बेगार प्रथा को बढ़ावा दिया"[6] जिसके बाद 1815 के बाद अंग्रेजों का संरक्षण मिला कई विद्वानों/ इतिहासकारों का मत है कि "1900 ई0 के लगभग इस प्रथा को समाप्त कर दिया गया था"[7]। किन्तु यह सत्य है कि दानपुर क्षेत्र में यह कुप्रथा प्रचलन में ही रही थी इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा कुली व्यवस्था हेतु प्रत्येक गांव के लिए "पधानों/प्रधानों को उत्तरदायी बनाया गया"[8]। और "प्रत्येक गॉव में कुली बेगार रजिस्टर बनाये गये इसमें प्रत्येक बालिग पुरूषों का नाम अंकित किया जाता पधान ही सर्वेसर्वा होता था कुछ पधान पूर्वग्रह एवं द्वेश से पीड़ित होते थे। वे उन व्यक्तियों की बारी अधिक लगाते जिनसे उनकी रंजिश थी"[9]। समान ढोने की सूचना पधान पुकार (धात) लगाकर देता था जिसे ग्रमीण 'काल धात' (मौत की पुकार)'[10] कहते थे। और जिसका नाम उच्चारित होता था उसे अवस्य ही जाना होता था। इस सम्बन्ध में इस क्षेत्र के स्वतन्त्रता सेनानी स्व0 चन्द्र सिंह शाही जी का मत है– "मैं बहुत छोटा था कपकोट में लोहारखेत डांक बंगले में कोई अंग्रेज अफसर जाने वाला था कुली बेगार के लिए मेरे पिताजी को 'धात' लगी घर में कुछ आवश्यक काम था इसलिए कुछ देर हो गयी तब तक सामान जा चुका था तभी पिताजी को बहुत बूरी डाठ लगाई गई और तिरवाण गांव के एक व्यक्ति जो भारी सामान ढो रहा था उसका सहयोग करने को कहा गया । तभी से मेरे मन में घृणा पैदा हुई। और मैं राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने लगा"[11]।

इस क्षेत्र में कुली बेगार को समाप्त करने के लिए ऐतिहासिक पहचान बनाने की शुरूआत सन् 1920 ई0 में काशीपुर में श्री हर गोविन्द पन्त के सभापतित्व में कुमाऊॅ परिषद के चौथे ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ जिसमें कुली बेगार का अन्त व जंगलजात नीतियों में सुधार के सम्बन्ध में ऐतिहासिक निर्णय हुआ। इसी समय श्री बद्रीदत्त पाण्डे जी के नेतृत्व में इस क्षेत्र के लोग काग्रेस के नागपुर अधिवेशन में भाग लेने एक प्रतिनिधि मण्डल गया जहॉ कुली बेगार की पीडा से गांधी जी को अवगत कराया गया। उन्होंने तब यहॉ आने में असमर्थता व्यक्त की।

1 जनवरी 1921 को ग्राम चामी बागेंश्वर के हरू मन्दिर में एक विशाल सभा ने कुली बेगार न देने की शपथ ली गयी और 1921 में ही बागेश्वर के कुली वेगार आंदोलन को पूरे देश में इस क्षेत्र को अपनी पहचान बनाने का मौका मिला और गांधी जी को उत्तराखण्ड की ओर खींचने में महत्वपूर्ण भूमिका यहाँ इस विशाल जन आंदोलन ने किया और इन आंदोलनो को सफल बनाने में यहाँ के महान स्वतंत्रता सेनानियों को आज भी देव तुल्य पूजे जाते हैं। और कुली बेगार के रजिस्टर इस क्षेत्र में पधानों से कुली बेगार कार्य कराया जाता था। इसका अन्त करने के लिए 1921 में सर्वप्रथम गोगिना के प्रधान दीवान प्रधान और जगथाना के भूप सिंह पधान ने कुली बेगार रजिस्टर सर्वप्रथम सरयू में फेंके उसके बाद रजिस्टर फेंकने की बरसात हो गयी''[12] महात्मा गांधी जी के दानपुर आने से यहाँ के स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरक और ताकत देने वाली साबित हुई 1929 में वह यहाँ आए उनके 22 दिन इतिहास के अविस्मरणीय पलों में दर्ज हो गया यह यात्रा इस लिए भी महत्वपूर्ण थी कि उससे आंदोलन को तो नई दिशा दी ही

साथ ही क्षेत्रीय स्तर पर यह संगठनात्मक रुप से मजबूत भी हुआ यह क्षेत्र स्वतंत्रता आंदोलन का तीर्थ बन गया चनौढा व अनाशक्ति आश्रम स्थापना इस क्षेत्र में मील के पत्थर साबित हुए व इस क्षेत्र के टुकड़ों टुकड़ों में चल रहे आंदोलनों को संगठित किया "जिसको बाद में सरला बहन ने आगे बढ़ाया"[13] गांधी जी द्वारा गीता पर आधारित अनाशक्ति योग की रचना यही पर की गांधी जी की यह यात्रा इस लिए भी यादगार है कि उन्होंने उस समय जिन–जिन स्थानों पर यात्रा की वह राष्ट्रीय आंदोलन के मुख्य केंद्र माने गए। गांधी जी को बागेश्वर तक लाने में महत्वपूर्ण भूमिका कुली बेगार आंदोलन की सफलता ही रही थी।

परिणाम

1. उत्तराखण्ड के बागेश्वर जनपद में हुए विशाल जन आन्दोलन से प्रभावित होकर गॉधी जी उत्तराखण्ड आऐ और क्षेत्रीय लोगों में देश प्रेम की भावना का विकास हुआ।
2. वर्तमान में यदि उत्तराखण्ड में कोई आन्दोलन हो रहा हो तो वह बागेश्वर में हुए कुली बेगार आन्दोलन की तर्ज पर हो रहा है और इस क्षेत्र से ही शुरूआत हो रही है जिससे यह क्षेत्र क्रान्ति स्थल के रूप में विकसित हो रहा है।
3. वर्तमान में बागेश्वर उतरायणी मेले में कुली बेगार आन्दोलन के बाद राजनैतिक मेले के रूप में विकसित हो गया और इसे राजकीय संरक्षण प्राप्त है जिससे पर्यटन के साथ–साथ रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं और पलायन भी कम हुआ है।
4. इस जन आन्दोलन से प्रभावित होकर क्षेत्रीय युवाओं में देश प्रेम की भावना जागृत हुई और प्रतिवर्ष कई युवा आर्मी में भर्ती होकर देश सेवा कर रहे हैं।

निष्कर्ष

इस आन्दोलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका क्षेत्रीय लोगों का ही है। इस क्षेत्र के लोग सीमान्त हिमालय के तलहटी से तीन– चार दिन की पैदल यात्रा कर सरयू बगड़ पहुचकर शक्तिशाली अंग्रेजी शासन के खिलाफ खडा होना इस क्षेत्र की बीरता को इंगित करता है। किन्तु कई इतिहासकारों ने इस क्षेत्र के लोगों उपेक्षा एव उन लोगों का नाम अभी तक न उजागर करना इस आन्दोलन की उपेक्षा से कम नही है। और इस क्षेत्र के पधानों ने इस आन्दोलन में बढ़ चढकर भाग लिया और ये लोग कुली बेगार रजिस्टर साथ लाए और उन्हे सरयू नदी में प्रवाहित कर दिया।

1921 में दानपुर में कुली वेगार आंदोलन को पूरे देश में इस क्षेत्र को अपनी पहचान बनाने का मौका मिला और गांधी जी को दानपुर क्षेत्र की ओर खींचने में महत्वपूर्ण भूमिका यहाँ इस विशाल जन आंदोलन ने किया और कुली बेगार के रजिस्टर इस क्षेत्र में पधानों से कुली बेगार कार्य कराया जाता था। इसका अन्त करने के लिए 1921 में "सर्वप्रथम गोगिना के प्रधान दीवान प्रधान और जगथाना के भूप सिंह पधान ने कुली बेगार रजिस्टर सर्वप्रथम सरयू में फेंके उसके बाद रजिस्टर फेंकने की बरसात हो गयी। महात्मा गांधी जी के बागेश्वर आने से यहाँ के स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरक और ताकत देने वाली साबित हुई 1929 में वह यहाँ आए उनके 22 दिन इतिहास के अविस्मरणीय पलों में दर्ज हो गया यह यात्रा इस लिए भी महत्वपूर्ण थी कि उससे आंदोलन को तो नई दिशा दी ही साथ ही क्षेत्रीय स्तर पर यह संगठनात्मक रुप से मजबूत भी हुआ यह क्षेत्र स्वतंत्रता आंदोलन का तीर्थ बन गया चनौदा व अनाशक्ति आश्रम स्थापना इस क्षेत्र में मील के पत्थर साबित हुई व इस क्षेत्र के टुकड़ों टुकड़ों में चल रहे आंदोलनों को संगठित किया और गांधी जी द्वारा गीता पर आधारित अनाशक्ति योग की रचना यही पर की गांधी जी की यह यात्रा इस लिए भी यादगार है कि उन्होंने उस समय जिन–जिन स्थानों पर यात्रा की वह राष्ट्रीय आंदोलन के मुख्य केंद्र माने गए। गांधी जी को उत्तराखण्ड तक लाने में महत्वपूर्ण भूमिका कुली बेगार आंदोलन की सफलता ही रही इस सफलता के कारण गांधी जी

द्वारा यंग इण्डिया में इस आन्दोलन के बारे में लिखा है कि– "इसका प्रभाव सम्पूर्ण था, यह एक रक्तहीन क्रांन्ति थी"[14]। इस आन्दोलन के सफल नेतृत्व के कारण ही बद्रीदत्त पाण्डे को कुमाऊॅ केसरी की उपधि प्रदान की गयी। और इस आन्दोलन को सफल बनाने में गांव जगथाना के पधान भूप सिंह पधान तथा गोगिना के दिवान सिंह पधान द्वारा सर्वप्रथम कुली बेगार रजिस्टर को सरयू में फेंककर किया गया और इस सफल आन्दोलन में इस क्षेत्र के "मोहन सिंह मेहता, लक्ष्मी दत्त शास्त्री, केशर सिंह रावत, मंगतराम खेतवाल, हरिकृण पाण्डे, ईश्वरी दत्त, धूलिया बडोना बंधु, प्रयाग दत्त पंत, चन्द्र सिंह शाही, वीर सिंह, रेवाधर, मोहन सिह ऐठानी, विष्णुदत्त जोशी, बहादुर सिंह, प्रेम सिंह शाही, नरोत्तम, टीका राम, जोगा सिंह, जीत सिंह, चन्द्र सिंह, घुर सिंह डोटियाल, खीम सिंह, राम दत्त, ख्याली राम जोशी, बद्री दत्त पाठक, प्रेम सिंह गड़िया, पुरुषोतम उपाश्याय, गोविन्द सिंह नेगी, गांगी लाल, टीका राम, राम दत्त, गोपाल सिंह, नारायण दत्त, शिवलाल, ललता प्रसाद, प्रेम लाल, लाथ सिंह, नन्द लाल साह, गिरधारी लाल साह, कुन्दन लाल साह, हरुली देवी, हर लाल साह, हरक सिंह उर्फ इन्द्र सिंह, लाल सिंह विष्ट, राम लाल साह, राम दत्त, मनोहर लाल साह, मदन सिंह, भैरव दत्त, प्रेम सिंह परिहार, देवीदत्त, दुर्गा लाल साह, दिवान सिंह, टीका राम, जैंत सिंह, जीत सिंह, चतुर सिंह, राम सिंह, मोहन सिंह, गुमान सिंह, मनोरथ पंत, शीर्षराम, माधो सिंह, मंगल सिंह धपोला, भवान सिंह, प्रेम सिंह, प्रवीण सिंह कालाकोटी, प्रताप सिंह, प्रयाग दत्त, नन्द राम, दिवान सिंह,खीमानन्द, कल्याण सिंह, चन्द्र सिंह" आदि लोगों के पूर्ण सहयोग से अंग्रेजो द्वारा इस कुप्रथा को हमेशा के लिए इस क्षेत्र में बन्द करना पडा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय गोपाल दत्त स्कन्द पुराण मानसखण्ड व्याथाकार : स्कन्द पुराण 1989 पृ० 23
2. कठौच,डा0 यशवंत सिंहःउत्तराखण्ड का नवीन इतिहास पृष्ठ–66
3. वही 66
4. वही पृ0 67
5. वही पृ० 66
6. उनियाल, हेमाः मानसखण्डः पृष्ठ – 7
7. पाण्डे बद्रीदत्तःकुमाऊॅ का इतिहासः पृ–117
8. उनियाल,हेमाः मानस खण्डः –14
9. साक्षात्कार श्री गोविन्द सिंह भंडारी एडवोकेट एवं विधिक सलाहकार वरिष्ठ नागरिक जन कल्याण न्यास जिला बागेश्वर 4 पी0 एम0 दि0 26/11/2022
10. साक्षात्कार श्री विक्रम सिंह शाही पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष जिला बागेश्वर 6 पी0 एम0 दि0 20/11/2022
11. साक्षात्कार श्री चन्द्रशेखर जोशी पूर्व प्रधानाध्यापक पिण्डारी रोड़ जिला बागेश्वर 4 पी0 एम0 दि0 28/11/2022
12. नैथानी, डा0 शिव प्रसादः उत्तराखण्ड का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक भूगोल पृ–417
13. कुली बेगार आन्दोलन शताब्दी वर्ष 2021 स्मारिका वरिष्ठ नागरिक जन कल्याण ट्रस्ट, बागेश्वर द्वारा प्रकाशित मुद्रक बागनाथ प्रेस बागेश्वर
14. हिन्दी पाक्षिक समाचार पत्र बागनाथ न्यूज ऐक्सप्रेस अंक 1, दि0 18 अगस्त 2014 पृ0 04–05